अद्य ब्रह्मसिद्धाद्वैत श्रीराधावल्लभीय सम्प्रदाय पूर्वाचार्य
शिरोमणि जगद्गुरु श्रीहित वंशीरूप श्रीमद्गोस्वामी
श्रीहित हरिवंश महाप्रभु विरचित

श्रीहित चतुराशी जी

और

श्रीहित स्फुटवाणीजी

शब्द साधना

हित रवि सारड़ा

मोतीझील, वृन्दावन

संपादक

आचार्य श्रीहित राधेशलाल गोस्वामी

टिकैत अधिकारी : श्रीराधावल्लभ मंदिर
वृन्दावन

हरियाली तीज

सं. २०५६ वि. हिताब्द ५२६

www.RadhaVallabhMandir.com

श्री राधावल्लभीय सम्प्रदायाचार्य प्रधान पीठाधिपति
गोस्वामी श्री हित सुकुमारी लाल जी महाराज **"टीकैत"** अधिकारी के पुत्र
गोस्वामी श्रीहित राधेशलाल जी महाराज **"टीकैत"** अधिकारी

गोस्वामी श्रीहित मोहितमराल जी महाराज
(युवराज)
श्री राधाबल्लभ मन्दिर, वृन्दावन ।

परम आराध्य श्री राधावल्लभलाल जी

वृन्दावन

!! श्रीहित राधावल्लभोजयति !!
!! श्रीहित हरिवंशचन्द्रोजयति !!

श्रीमद्गोस्वामी श्रीहित हरिवंशचन्द्र महाप्रभु विरचित

श्रीहित चतुराशीजी

राग विभाग/ललित । शय्या समय

जोइ-जोइ प्यारो करै सोई मोहि भावै,
भावै मोहि जोई सोई-सोई करै प्यारे ।।
मोकों तौ भावती ठौर प्यारे के नैननि में,
प्यारो भयो चाहै मेरे नैननि के तारे ।।
मेरे तन-मन-प्राण हूँ तें प्रीतम प्रिय,
अपने कोटिक प्राण प्रीतम मोसौं हारे ।।
जै श्रीहित हरिवंश हंस-हंसिनी स्यामल-गौर,
कहौ कौन करै जल-तरंगनि न्यारे ।।१।।

। राग विभास/ललित । शय्या समय

प्यारे बोलि भामिनी आजु नीकी जामिनी
भेंटु नवीन मेघ सों दामिनी ।।
मोहन रसिकराइ री माई, तासौं जु-
मान करै ऐसी कौन कामिनी ।।
जै श्रीहित हरिवंश श्रवन सुनत प्यारी,
राधिकारमन सों मिली गजगामिनी ।।२।।

। राग विभास/ललित । प्रातः मंगला समय

प्रात समय दोऊ रस-लंपट,
सुरत-जुद्ध जय-जुत अति फूल ।।

श्रम वारिज-घन-बिन्दु वदन पर,
भूषण अंगहि अंग बिकूल ।।
कछु रह्यौ तिलक सिथिल अलकावलि,
वदन-कमल मानों अलि भूल ।।
जै श्रीहित हरिवंश मदन-रंग रंगि रहे,
नैन, बैन, कटि सिथिल दुकूल ।।३।।

। राग विभास/ललित । मंगल समय (हास)

आजु तौ जुवति तेरो वदन आनंद भरयौ,
पिय के संगम के सूचत सुख चैन ।।
आलस-वलित बोल सुरंग रंगे कपोल,
बिथकित अरुन उनीदे दोऊ नैन ।।
रुचिर तिलक-लेश, किरत कुसुम-केश,
सिर-सीमंत भूषित मानों तैं न ।।
करुनाकर उदार राखति कछू न सार,
दसनवसन लागति जब दैन ।।
काहे कौ दुरति भीरु, पलटे प्रीतम चीर,
बस किये श्याम सिखै सत-मैन ।।
गलित उरसि-माल, सिथिल किंकिनी-जाल,
जै श्रीहित हरिवंश लता-गृह सैन ।।४।।

राग विभास/ललित । मंगला समय (हास)

आजु प्रभात लता-मंदिर में,
सुख बरषत अति हरषि युगल वर ।।
गौर श्याम अभिराम रंगभरे,
लटरि-लटरि पग धरत अवनी पर ।।
कुच कुमकुम रंजित मालावलि,

परम आराध्य श्री राधाबल्लभलाल जी
वृन्दावन

सुरत-नाथ श्रीश्याम धाम धर ।।

प्रिया प्रेम के अंक अलंकृत,
चित्रित चतुर-शिरोमणि निज कर ।।
दंपति अति अनुराग मुदित,
कल गान करत मन हरत परस्पर ।।
जै श्रीहित हरिवंश प्रशंस-परायन,
गायन अलि सुर-देत मधुरतर ।।५।।

। राग विभास/ललित । मंगल समय (हास)

कौन चतुर जुवती प्रिया,
जाहि मिलत लाल चोर ह्वै रैन ।।
दुरवत् क्योंऽब दुरै सुनि प्यारे,
रंग में गहिले चैन में नैन ।।
उर नख-चन्द्र बिराने-
पट अटपटे से बैन ।।
जै श्रीहित हरिवंश रसिक-
राधापति प्रमथित-मैन ।।६।।

। राग बिलाबल । शय्या समय

आजु निकुंज मंजु में खेलत,
नवल किशोर नवीन किशोरी ।।
अति अनुपम अनुराग परस्पर,
सुनि अभूत भूतल पर जोरी ।।
विद्रुम, फटिक बिबिध निर्मित घर,
नव कर्पूर पराग न थोरी ।।

कोमल किसलय सैन सुपेशल,
तापर श्याम निवेशित गोरी ।।

मिथुन हास-परिहास परायन,
पीक-कपोल कमल पर झोरी ।।
गौर श्याम भुज कलह मनोहर,
नीवि-बंधन मोचत डोरी ।।
हरि उर-मुकुर बिलोकि अपनपौ
विभ्रम विकल मान-जुत भोरी ।।
चिबुक सुचारु प्रलोइ प्रबोधत,
पिय प्रतिबिंब जनाए निहोरी ।।
नेति-नेति वचनामृत सुनि-सुनि,
ललितादिक देखतिं दुरि चोरी ।।
जै श्रीहित हरिवंश करति कर-धुनन,
प्रणय-कोप मालावलि तोरी ।।७।।

। राग बिलावल । प्रातः समय,बनविहार

अति ही अरुन तेरे नैन नलिन री ।
आलस-जुत इतरात रँगमगे,
भये निशि जागर मषिन-मलिन री ।।
सिथिल-पलक में उठति गोलक गति,
बिंधयौ मोहन-मृग सकत चलिन री ।।
जै श्रीहित हरिवंश हंस-कल-गामिनी,
संभ्रम देत भ्रमरनि-अलिनि री ।।८।।

। राग बिलावल । श्रृंगार समय

बनी श्रीराधा मोहन की जोरी ।
इंद्रनील-मणि श्याम मनोहर, शातकुम्भ-तनु गोरी ।। भाल विशाल तिलक हरि, कामिनी चिकुर-चंद बिच रोरी ।
गज-नायक प्रभु चाल, गयंदनि-गति वृषभानु किशोरी ।।
नील-निचोल जुबति, मोहन पट-पीत अरुन सिर खोरी ।
जै श्रीहित हरिवंश रसिक राधापति सुरत-रंग में बोरी ।।९।।

। राग बिलावल । शय्या समय

आजु नागरी-किशोर भाँवती विचित्र जोर,
कहा कहौं अंग-अंग परम माधुरी ।।
करत केलि कंठ मेलि बाहुदंड गंड-गंड,
परस सरस रास-लास मंडली जुरी ।।
श्याम-सुंदरी विहार; बांसुरी, मृदंग,तार,
मधुर घोष नूपुरादि किंकिनी चुरी ।।
जैश्री देखति हरिवंश आलि, निर्त्तनी सुढंग-चाल,
वारीफेरी देत प्राण देहसों दुरी ।।१०।।

। राग बिलावल । शय्या समय

मंजुल कल कुंज-देश, राधा-हरि विशद वेश,
राका नभ कुमुदबंधु शरद यामिनी ।
स्यामल द्युति कनक-अंग, विहरत मिलि एक संग,
नीरद-मणि नील मध्य लसति दामिनी ।।
अरुन पीत नव दुकूल, अनुपम अनुराग मूल,

www.RadhaVallabhMandir.com

सौरभ-जुत शीत अनिल-मंद-गामिनी ।
किसलय-दल रचित सैन, बोलत पिय चाटु-बैन,
मान सहित प्रतिपद प्रतिकूल कामिनी ।।
मोहन मन मथन मार, परसत कुच-नीवि-हर,
वेपथु-युत नेति-नेति वदति भामिनी ।
नरवाहन' प्रभु सुकेलि, बहु विधि भर भरत झेलि,
सौरत रस-रूप-नदी जगत-पावनी ।।११।।

। राग बिलावल । रास समय

चलहि राधिके सुजान, तेरे हित सुख निधान,
रास रच्यौ श्याम तट-कलिंद-नंदिनी ।
निर्तत जुवती समूह, राग-रंग अति कुतूह,
बाजत रस-मूल मुरलिका आनंदिनी ।।
वंशीबट निकट जहां, परम रमन भूमि तहां,
सकल सुखद मलय बहै वायु मंदिनी ।
जाती ईषद विकास,कानन अतिशय सुवास,
राका-निसि सरद मास विमल चंदिनी ।।
नरवाहन' प्रभु निहार, लोचन भरि घोष-नारि,
नख-सिख सौंदर्य काम-दुख निकंदिनी ।
बिलसहु भुज ग्रीव मेलि, भामिनि सुख-सिंधु झेलि,
नव निकुंज श्याम-केलि जगत-वंदिनी ।।१२।।

। राग बिलावल । मंगला उपरांत

नन्द के लाल हरयो मन मोर ।
हौं अपने मोतिन-लर पोवति,
कांकर डारी गयो सखि भोर ।।
बंक बिलोकनि चाल छबीली,

रसिक-शिरोमणि नन्द-किशोर ।।
कहि कैसे मन रहत श्रवन सुनि,
सरस मधुर मुरली की घोर ।।
इंदु-गोविन्द-वदन के कारन,
चितवन को भये नैन-चकोर ।।
जै श्रीहित हरिवंश रसिक रस जुवती,
तू लै मिलि सखी प्राण अकोर ।।१३।।

। राग टोडी । स्नान समय

अधर-अरुण तेरे कैसें कै दुराऊँ ।
रवि-शशि शंक भजन कियो अपबस,
अद्भुत-रंगनि-कुसुम बनाऊँ ।।
शुभ कौसेय कसिब कौस्तुभमणि,
पंकज-सुतनि लै अंगनि लुपाऊँ ।।
हरषित इंदु तजत जैसे जलधर,
सो श्रम ढूँढि कहां हौं पाऊँ ।।
अम्बुनि दम्भ कछू नहीं व्यापत,
हिमकर तपै ताहि कैसें कै बुझाऊँ ।।
जै श्रीहित हरिवंश रसिक नवरंग पिय,
भृकुटी भौंह तेरे खंजन लड़ाऊँ ।।१४।।

। राग टोडी । सुरतान्त समय

अपनी बात मोसौं कहि री भामिनी,
औंगी-मौंगी रहति गरब की माती ।।
हौं तोसों कहति हारी, सुनि री राधिका प्यारी,
निसि को रंग क्यों न कहति लजाती ।

गलित कुसुम-बेनी, सुनि री सारंगनयनी,
छूटी लट अचरा वदति अलसाती ।।
अधर-निरंग रंग रच्यो री कपोलनि,
जुवति चलति गज-गति अरुझाती,
रहसि रमि छबीले, रसन-बसन ढीले,
सिथिल कसनि-कंचुकी उर राती ।
सखी सों सुनि श्रवन बचन, मुदित मन-
चली हरिवंश भवन मुसकाती ।।१५।।

। राग टोडी । शय्या समय

आजु मेरे कहे चलौ मुगनैनी ।
गावत सरस जुवति-मंडल में,
पिय सों मिलें भलैं पिकबैनी ।।
परम प्रवीन कोक-विद्या में,
अभिनय निपुन लाग-गति लैनी ।।
रूप-राशि सुनि नवल किशोरी,
पल-पल घटति चाँदनी-रैनी ।।
जै श्रीहित हरिवंश चली अति आतुर-
राधा,रवन सुरत-सुख दैनी ।।
रहसि रभस आलिंगन-चुंबन,
मदन कोटि कुल भई कुचैनी ।।१६।।

। राग टोडी । शय्या समय

आजु देखि व्रज सुंदरी मोहन बनी केलि ।

www.RadhaVallabhMandir.com

अंस-अंस बाहु दै, किशोर जोर रूप-राशि,
मनौ तमाल अरूझि रही सरस कनक-बेलि ।।
नव निकुंज भ्रमर-गुंज, मंजु घोष प्रेम-पुंज,
गान करत मोर-पिकनि अपने स्वर सों मेलि ।।
मदन मुदित अंग-अंग, बीच-बीच सुरत-रंग,
पल-पल श्री हरिवंश पिवति नैन-चषक झेलि ।।१७।।

। राग आसावरी । शय्या सुरतान्त

सुनु मेरो बचन छबीली राधा,
तैं पायो रससिंधु अगाधा ।।
तू बृषभानु-गोप की बेटी,
मोहनलाल रसिक हँसि भेटी ।।
जाहि विरंचि उमापति नाये,
तापै तैं बन-फूल बिनाये ।।
जो रस नेति-नेति श्रुति भाख्यो,
ताको तैं अधर सुधा-रस चाख्यो ।
तेरो रूप कहत नहीं आवै,
जै श्रीहित हरिवंश कछुक जस गावै ।।१८।।

। राग आसावरी । रास समय

खेलत रास रसिक व्रज मंडन,
जुबतिन अंस दिये भुज-दण्डन ।।
सरद विमल नभ चन्द्र विराजै,
मधुर-मधुर मुरली कल बाजै ।।
अति रालत घनश्याम-तमाला,
कंचन-बेलि बनी व्रजबाला ।।

बाजत ताल, मृदंग, उपंगा,
गान मथत मन कोटि अनंगा ।।
भूषन बहुत बिबिध रंग सारी,
अंग-सुंधग दिखावति नारी ।।
बरषत कुसुम मुदित सुरयोषा,
सुनियत दिवि दुंदुभि कल घोषा ।।
जै श्रीहित हरिवंश मगन मन श्यामा,
राधा-रवन सकल सुख-धाम ।।१९।।

।राग धनाश्री । सुरतान्त समय

मोहन लाल के रस-माती ।
वधू गुपित गोवति कत मोसौं, प्रथम नेह सकुचाती ।।
देखि सँभार पीत-पट ऊपर, कहाँ चूनरी-राती ।
टूटी लर लटकति मोतिनि की, नख-विधु अंकित छाती ।।
अधर-बिम्ब खंडित, मषि मंडित गंड, चलति अरुझाती ।
अरुन नैन घूमत आलस-जुत, कुसुम गलित लट-पाँती ।।
आजु रहसि मोहन सब लूटी, बिबिध आपुनी थाती ।
जैश्रीहित हरिवंश बचन सुनि भामिनि, भवन चली मुसकाती।।२०।।

।राग धनाश्री । सुरतान्त समय

तेरे नैन करत दोऊ चारी ।
अति कुलकात समात नहीं,
कहूँ मिले हैं कुँजबिहारी ।

www.RadhaVallabhMandir.com

बिथुरी माँग, कुसुम गिरि-गिरि परैं,
लटकि रही लट न्यारी ।
उर नखरेखा प्रगट देखियत है,
कहा दुरावति प्यारी ।
परी है पीक सुभग गंडनि पर,
अधर निरंग सुकुमारी ।
जै श्रीहित हरिवंश रसिकिनी भामिनी,
आलस अंग-अंग भारी ।।२१।।

।राग धनाश्री । सुरतान्त वा शृंगार समय

नैननि पर वारौं कोटिक खंजन ।
चंचल, चपल, अरुन, अनियारे अग्रभाग बन्यौ अंजन ।।
रुचिर, मनोहर वक्र-बिलोकनि, सुरत-समर-दल गंजन ।
जैश्रीहित हरिवंश कहति न बनै छबि सुखसमुद्र-मन रंजन।।२२।।

।राग धनाश्री । सुरतान्त समय

राधा प्यारी तेरे नैन सलोल ।
तैं निज भजन कनक-तन जोबन, लियौ मनोहर मोल ।।
अधर निरंग, अलिक लट छूटी, रंजित पीक कपोल ।
तू रस-मगन भई नहिं जानति, ऊपर पीत-निचोल ।।
कुच-युग पर नखरेख प्रगट मानौ शंकर-शिर-शशि-टोल ।
जैश्रीहित हरिवंश कहति कछु भामिनी अति आलस सों बोल।।२३।।

।राग धनाश्री । रास समय

आजु गोपाल रास-रस खोलत,
पुलिन कल्पतरु तीर री सजनी ।

www.RadhaVallabhMandir.com

सरद बिमल नभ चन्द्र बिराजत,
रोचक त्रिविध समीर री सजनी ।।
चंपक, बकुल, मालती मुकुलित,
मत्त मुदित पिक-कीर री सजनी ।
देशी-सुधंग राग रंग नीकौ,
व्रज जुबतिन की भीर री सजनी ।।
मघवा मुदित निसान बजायो,
व्रत छाड़्यौ मुनि धीर री सजनी ।
जै श्रीहित हरिवंश मगन मन श्यामा,
हरति मदन-घन-पीर री सजनी ।।२४।।

। राग धनाश्री । श्रृंगार वा शय्या समय

आजु नीकी बनी श्रीराधिका नागरी ।
व्रज जुबति जूथ में रूप अरु चतुरई,
शील श्रृंगार गुन सबन तें आगरी ।।
कमल दक्षिण-भुजा, वाम-भुज अंस, सखि
गावति सरस मिलि मधुरस्वर-राग री ।
सकल विद्या बिदित रहसि हरिवंश हित,
मिलति नव कुंज वर श्याम बड़भाग री ।।२५।।

। राग धनाश्री । श्रृंगार वा रास समय

मोहनी मदन-गोपाल की बाँसुरी ।
माधुरी श्रवनपुट सुनत, सुनि राधिके,
करत रतिराज के ताप कौ नासु री ।।
शरद राका रजनि बिपिन वृन्दा सजनी,

अनिल अति मंद शीतल सहित बासु री ।
परम पावन पुलिन, भृंग सेवत नलिन,
कल्पतरू-तीर बलवीर कृत रासु री ।।
सकल मंडल भलीं तुम जु हरि सों मिली,
बनी वर बनित उपमा कहौं कासु री ।
तुम जु कंचन-तनि, लाल मरकत-मनि,
उभै-कलहंस हरिवंश बलि दासु री ।।२६।।

। राग बसन्त । रास समय

मधुरितु वृन्दावन आनंद न थोर,
राजत नागरी नव कुशल किशोर ।।
जूथिका जुगल रूपमंजरी रसाल,
बिथकित अलि मधुर माधवी गुलाल ।।
चंपक, बकुल कुल बिबिध सरोज,
केतकी मोदिनी मद मुदित मनोज ।।
रोचक रूचिर बहै त्रिविध समीर,
मुकुलित नूत नदति पिक-कीर ।।
पावन पुलिन घन मंजुल निकुंज,
किसलय सैन रचित सुख-पुंज ।।
मंजीर, मुरज, डफ, मुरली, मृदंग,
बाजत उपंग वीणा वर मुख चंग ।।
मृगमद, मलयज, कुमकुम, अबीर,
बंदन, अगर-सत्त सुरंगित चीर ।।
गावत सुंदरी-हरि सरस धमार,
पुलकित खग मृग बहस न वार ।।
जै श्रीहित हरिवंश हंस-हंसिनी समाज,
ऐसें ही करौ मिलि जुग-जुग राज ।।२७।।

परम आराध्य श्री राधावल्लभलाल जी
वृन्दावन

। राग बसन्त । बन विहार समय

राधे देख बनकी बात ।
रितु बसंत अनंत मुकुलित कुसुम अरु फल पात ।
बेनु धुनि नन्दलाल बोलि सुनिऽब क्यों अरसात ।
करति कतऽब विलंब भामिनी वृथा औसर जात ।
लाल मरकतमणि छबीलौ तुम जु कंचन-गात ।
बनी (जैश्री) हित हरिवंश जोरी उभय गुण-गण मात ।।२८।।

। राग देवगंधार । शय्या या श्रृंगार समय

व्रज नव-तरुणि कदंब मुकुट-मणि, श्यामा आजु बनी ।
नख-सिख लौं अंग-अंग माधुरी, मोहे श्याम-धनी ।।
यौं राजत कबरी गूँथित कच, कनक-कंज-वदनी ।
विकुर-चंद्रिकनि बीच अर्धविधु मानो ग्रसित फनी ।।
सौभग-रस सिर श्रवत पनारी,पिय सीमंत ठनी ।
भृकुटि काम कोदंड, नैन सर, कज्जल-रेख अनी ।।
तरल तिलक, ताटंक गंड पर, नासा जलज-मनि ।
दसन-कुंद, सरसाधर-पल्लव, प्रीतम मन शमनी ।।
चिबुक मध्य अति चारु सहज सखि सौंवल बिंदु-कनी ।
प्रीतम प्राण-रतन संपुट-कुच, कंचुकी-कसिब-तनी ।।
भुज-मृनाल बल हरत वलय-युत परस सरस श्रवनी ।
श्याम शीश तर मनो भिडवारी रची रुचिर रवनी ।।
नाभि-गंभीर, मीन मोहन मन, खेलन को ह्रदनी ।
कृश कटि, पृथु नितंब किंकिनि वृत, कदली-खंभ जघनी ।।
पद-अम्बुज जावक-जुत भूषन प्रीतम उर-अवनी ।
नव-नव भाइ विलोभि भाम इभ विहरत वर करिनी ।।
जै श्रीहित हरिवंश प्रशंसति श्यामा कीरति बिषद घनी

गावत, श्रवननि सुनत सुखाकर विश्व-दुरितदमनी ।।२९।।

। राग देवगंधार । शय्या समय

देखत नव निकुंज सुनि सजनी लागत है अति चारु ।
माधविका-केतकी-लता लै, रच्यौ मदन आगारु ।।
शरद मास, राका निशि, शीतल-मंद-सुंगध समीर ।
परिमल लुब्ध मधुव्रत विथकित, नदति कोकिला-कीर ।।
बहु बिधि रंग मृदुल किसलय-दल निर्मित पिय सखि सेज ।
भाजन कनक बिबिध मधु पूरित, धरे धरनी पर हेज ।।
तापर कुशल किशोर-किशोरी करत हास-परिहास ।
प्रीतम पानि उरज-वर परसत प्रिया दुरावति बास ।।
कामिनि कुटिल भृकुटि अवलोकति दिन प्रतिपद प्रतिकूल ।
आतुर अति अनुराग बिवश हरि धाइ धरत भुजमूल ।।
नागर नीवि-बंधन मोचत, ऐंचत नील निचोल ।
वधू कपट हठ कोप कहति कल नेति-नेति मधुबोल ।।
परिरंभन बिपरीत-रति बितरति सरस सुरत निजु केलि ।
इन्द्रनीलमणिमय त+ मानों लसति कनक-की-बेलि ।।
रति-रण मिथुन ललाटपटल पर श्रमजल-सीकर संग ।
ललितादिक अंचल झकझोरतिं मन अनुराग अभंग ।।
जै श्रीहित हरिवंश यथामति बरनति कृष्ण-रसामृत-सार ।
श्रवन सुनत प्रापक रति राधा-पद-अम्बुज सुकुमार ।।३०।।

। राग देवगंधार । सुरतान्त समय

आज अति राजत दंपति भोर ।
सुरत-रंग के रस में भीने नागरि नवल किशोर ।।
अंसनि पर भुज दियें बिलोकत इन्दुवदन विवि ओर ।

करत पान रस-मत्त परस्पर लोचन तृषित चकोर ।।
छूटी लटनि लाल मन करष्यौ ये याके चितचोर ।
परिरंभन चुंबन मिलि गावत सुर मंदर-कल-घोर ।।
पग डगमगत चलत बन बिहरत रुचिर कुंज-घन खोर ।
जैश्रीहित हरिवंश लाल-ललना मिलि हियौ सिरावत मोर ।।३१।।

। राग देवगंधार । शय्या समय

आज बन क्रीड़त श्यामा-श्याम ।
सुभग बनी निशि शरद चाँदनी, रुचिर कुंज अभिराम ।
खंडन-अधर करत परिरंभन ऐंचत जघन-दुकूल ।
उर नख-पाँत, तिरछी चितवनि, दंपति रस समतूल ।
ये भुज पीन पयोधर परसत, वामदृशा पिय-हार ।
बसननि पीक, अलक आकर्षति, समर श्रमित-सतमार ।
पल-पल प्रबल चौंप रस-लंपट, अति सुंदर सुकुमार ।
जैश्रीहित हरिवंश आजु तृण टूटत हौं बलि बिषद बिहार ।।३२।।

। राग देवगंधार । मंगला समय

आजु बन राजत जुगल किशोर ।
नन्द-नन्दन वृषभानु-नंदनि उठे उनीदे भोर ।।
डगमगात पग परत शिथिल गति, परसत नख-शशि-छोर ।
दसन-वसन खंडित, मषि मंडित गंड, तिलक कछु थोर ।।
दुरत न कच करजनि के रोके, अरुन नैन अलिचोर ।
जैश्रीहित हरिवंश सँभार न तन-मन सुरत-समुद्र झकोर ।।३३।।

। राग देवगंधार । सुरतान्त समय

बन की कुंजन-कुंजन डोलनि ।

www.RadhaVallabhMandir.com

निकसत निपट सांकरी बीथिनि परसत नाहिं निचोलनि ।।
प्रातकाल रजनी सब जागे सूचत सुख दृग लोलनि ।
आलसवंत अरुन अति व्याकुल कछु उपजति गति गोलनि ।।
नर्तन भृकुटि वदन-अम्बुज, मृदु सरस हास मधु बोलनि ।
अति आसक्त लाल अलि लंपट बस कीने बिनु मोलनि ।।
बिलुलित सिथिल स्याम छूटी लट राजति रुचिर कपोलनि ।
रति-बिपरीत चुंबन परिरंभन चिबुक चारु टकटोलनि ।।
कबहुँ श्रमित किसलय-सिज्या पर मुख अंचल-झकझोलनि ।
दिन हरिवंश दासि हिय सींचत बारिध-केलि-कलोलनि ।।३४।।

। राग देवगंधार । झूलन समय

झूलत दोऊ नवल किशोर ।
रजनी-जनित रंग सुख सूचत अंग-अंग उठि भोर ।।
अति अनुराग भरे मिलि गावत सुर मंदर-कल-घोर ।
बीच-बीच प्रीतम चित चोरत प्रिया नैन की कोर ।।
अबला अति सुकुमारि डरति मन वर हिंडोर झकोर ।
पुलकी-पुलकी प्रीतम उर लागति दै नव खरज अकोर ।।
अरुझी बिमल माल कंकन सों कुंडल सों कचडोर ।
वेपथु-युत क्यों बनै विवेचित आनंद बढयौ न थोर ।।
निरखि-निरखि फूलतिं ललितादिक बिबिमुख चन्द्र-चकोर ।
दै असीस हरिवंश प्रशंसति करि अंचल की छोर ।।३५।।

। राग सारंग । रास समय

आजु बन नीकौ रास बनायौ ।
पुलिन पवित्र सुभग जमुना-तट मोहन बेनु बजायौ ।।
कल कंकन किंकिनी नूपुर धुनि सुनि खग मृग सचु पायौ ।

www.RadhaVallabhMandir.com

जुबतिन मंडल मध्य श्याम घन सारंग राग जमायौ ।।
ताल, मृदंग, उपंग, मुरज, डफ मिलि रस-सिंधु बढ़ायौ ।
बिबिध बिशद वृषभानु-नंदिनी अंग-सुधंग दिखायौ ।।
अभिनय-निपुन लटकि-लट लोचन भृकुटि अनंग नचायौ ।
तातथेई ताथेई धरति नूतन गति पति व्रजराज रिझायौ ।।
सकल उदार नृपति-चूड़ामणि सुख-बारिद बरसायौ ।
परिरंभन चुंबन आलिंगन उचित जुवति-जन पायौ ।।
बरसत कुसुम मुदित नभनायक इंद्र-निसान बजायौ ।
जैश्रीहित हरिवंश रसिक राधापति जस-बितान जग छायौ ।।३६।।

। राग सारंग । शय्या समय संभ्रममान

चलहि किन मानिनी कुंज-कुटीर ।
तो बिनु कुंवर कोटि बनिता-जुत मथत मदन की पीर ।।
गद-गद स्वर, विरहाकुल, पुलकित, श्रवत विलोचन नीर ।
क्वासि-क्वासि वृषभानु-नंदिनी, बिलपत बिपिन अधीर ।।
वंशी बिसिख ब्याल मालावलि, पंचानन पिक-कीर ।
मलयज गरल, हुतासन मारुत, शाखामृगरिपु चीर ।।
जैश्रीहित हरिवंश परम कोमल चित चपल चली पिय तीर ।
सुनि भयभीत वज्र-को-पंजर सुरत-सूर रणवीर ।।३७।।

। राग सारंग । शय्या समय संभ्रममान

बेगि चलहि उठि गहर करति कत निकुंज बुलावत लाल ।
हा राधा! राधिका! पुकारत निरखि मदन-गज ढाल ।।

करत सहाय शरद-शशि मारुत फूटि मिली उर-माल ।
दुर्गम तकत, समर अति कातर, करहि न पिय प्रतिपाल ।।
जैश्रीहित हरिवंश चली अति आतुर श्रवन सुनत तिहीं काल ।
लै राखे गिरि-कुच बिच सुंदर सुरत-सूर व्रजबाल ।।३८।।

। राग सारंग । शय्या समय संभ्रममान

खोल्यौ लाल चाहत रवन ।
रचि-रचि अपने हाथ संवारयो निकुंज-भवन ।।
रजनी सरद मंद सौरभ सों सीतल पवन ।।
तो बिनु कुंवरि काम की बेदन मेटब कवन ।।
चलहि न चपल बाल मृगनयनी तजिव मवन ।।
जैश्रीहित हरिवंश मिलव, प्यारे की आरति दवन ।।३९।।

। राग सारंग । शय्या समय संभ्रममान

बैठे लाल निकुंज भवन ।
रजनी रुचिर, मल्लिका मुकुलित, त्रिविध पवन ।।
तू सखि कामकेलि, मनमोहन मदन दवन ।
वृथा गहर कत करति कृशोदरी कारन कवन ।।
चपल चली तन की सुधि बिसरी सुनत श्रवन ।
जैश्रीहित हरिवंश मिले रस-लंपट रधिका-रवन ।।४०।।

। राग सारंग । प्रातः समय संभ्रमान

प्रीति की रीति रंगीलोई जानैं ।
जद्यपि सकल लोक चूड़ामणि दीन अपनपौ मानैं ।।

जमुना-पुलिन निकुंज भवन में मान मानिनी ठानैं ।
निकट नवीन कोटि कामिनि-कुल धीरज मनहि न आनैं ।।
नश्वर नेह चपल मधुकर ज्यौं आन-आन सों बानैं ।
जैश्रीहित हरिवंश चतुर सोई लालहिं छाँड़ि मैड़ पहिचानैं ।।४१।।

। राग सारंग । प्रातः या शय्या समय

प्रीति न काहु की कानि विचारै ।
मारग अपमारग बिथकित मन को अनुसरत निवारै ।।
ज्यौं सरिता सावन-जल उमगत सनमुख सिंधु सिधारै ।
ज्यौं नादहि मन दिये कुरंगनि प्रगट पारधी मारै ।।
जैश्रीहित हरिवंश हिलग सारंग ज्यों शलभ शरीरहिं जारै ।
नाइक निपुन नवल मोहन बिनु कौन अपनपौ हारै ।।४२।।

। राग सारंग । शय्या समय, परिहार में सभ्रममान

अति नागरी वृषभानु-किशोरी ।
सुनि दूतिका चपल मृगनयनी,
आकर्षति चितवति चित गोरी ।।
श्रीफल-उरज, कंचन-सी देही,
कटि-केहरि, गुण-सिंधु झकोरी ।
बेनी-भुजँग, चंद्र-सत वदनी,
कदली-जंघा, जलचर गति चोरी ।।

www.RadhaVallabhMandir.com

सुनु हरिवंश आज रजनीमुख,
बन मिलाइ मेरी निज जोरी ।
जद्यपि मान समेत भामिनी,
सुनि कत रहति जिय भोरी ।।४३।।

। राग सारंग । शय्या समय संभ्रममान

चलि सुंदरी, बोलि वृन्दाबन ।
कामिनि कंठ लागि किन राजहि,
तू दामिनी, मोहन नूतन घन ।।
कंचुकी सुरंग, बिबिध रंग सारी,
नख-युग-ऊन बने तेरे तन ।
ये सब उचित नवल मोहन कों,
श्रीफल-कुच, जोबन-आगम घन ।।
अतिशय प्रीति हुती अन्तरगति,
जैश्रीहित हरिवंश चली मुकुलित मन ।
निबिड़ निकुंज मिले रस-सागर,
जीते सत-रतिराज सुरत-रन ।।४४।।

। राग सारंग । बन विहार समय

आवति श्री वृषभानु-दुलारी ।
रूप-राशि अति चतुर-शिरोमणि अंग-अंग सुकुमारी ।।
प्रथम उबटि, मज्जन करि, सज्जित नील-बरन तन सारी ।
गूँथित अलक, तिलक कृत सुंदर, सैंदूर माँग सँवारी ।।
मृगज समान नैन अंजन-जुत, रुचिर रेख अनुसारी ।
जटित लवंग ललित नासा पर, दसनावलि कृतकारी ।।

श्रीफल-उरज, कसूँभी कंचुकी कसि, ऊपर हार छवि न्यारी ।
कृश-कटि, उदर गंभीर नाभिपुट, जघन नितंबनि भारी ।।
मनौ मृनाल भूषन भूषित भुज श्याम अंस पर डारी ।
जैश्रीहित हरिवंश जुगल करिनी-गज बिहरत बन पिय-प्यारी ।।४५।।

। राग सारंग । शय्या समय

बिपिन घन कुंज रति-केलि भुज मेलि रुचि,
श्याम-श्यामा मिले शरद की जामिनी ।
हृदय अति फूल समतूल पिय नागरी,
करिनी,करि मत्त मनों बिबिध गुन रामिनी ।।
सरस गति हास-परिहास आवेश बस,
दलित दल-मदन बल-कोक रस कामिनी ।
जैश्रीहित हरिवंश सुनि लाल लावनि भिदे,
प्रिया अति सूर सुख सुरत-संग्रामिनी ।।४६।।

। राग सारंग । बन बिहार समय

बन की लीला लालहि भावै ।
पत्र-प्रसून बीच प्रतिबिंबहि नख-सिख प्रिया जनावै ।।
सकुच न सकत प्रगट परिरंभन अलि लंपट दुरि धावै ।
संभ्रम देत कुलकि कल कामिनि रति-रण-कलह मचावै ।।
उलटी सबै समुझि नैननि में अंजन-रेख बनावै ।
जैश्रीहित हरिवंश प्रीति-रीति बस सजनी स्याम कहावै ।।४७।।

www.RadhaVallabhMandir.com

बनी वृषभानु-नंदिनी आजु ।
भूषन बसन बिबिध पहिरें तन पिय मोहन हित साजु ।।
हाव-भाव, लावण्य, भृकुटि लट हरति जुबतिजन पाजु ।
ताल-भेद औघर स्वर सूचत नूपुर किंकिनी बाजु ।।
नव निकुंज अभिराम श्याम संग नीकौ बन्यौ समाजु ।
जैश्रीहित हरिवंश बिलास-रस-जुत जोरी अविचल राजु ।।४८।।

। राग सारंग । शय्या विहार समय

देखि सखी राधा-पिय केलि ।
ये दोऊ खोरि खारक, गिरि गहबर,
बिहरत कुँवर कंठ भुज मेलि ।।
ये दोऊ नवल किशोर रूप-निधि,
विटप तमाल कनक मनौ बेलि ।
अधर-अदन चुंबन परिरंभन,
तन पुलकित आनंद रस झेलि ।।
पट-बंधन कंचुकि कुच परसत,
कोप-कपट निरखति कर पेलि ।
जैश्रीहित हरिवंश लाल रस-लंपट,
धाइ धरत उर बीच सकेलि ।।४९।।

। राग सारंग । शय्या समय

नवल, नागरी, नवल नागर किशोर मिलि,
कुंज कोमल कमल दलनि सिज्या रची ।
गौर-स्यामल अंग रुचिर तापर मिले,
सरस मनि-नील मनो मृदुल कंचन खची ।।
सुरत नीवी-निबंध हेतप्रिय मानिनी,

प्रिया की भुजनि में कलह मोहन मची ।
सुभग श्रीफल-उरज पानि परसत रोष,
हुंकार गर्व दृग-भंगि भामिनी लची ।।
कोक कोटिक रभस रहसि हरिवंश हित,
बिबिध कल माधुरी किमपि नाहिन बची ।।
प्रनयमय रसिक ललितादि लोचन-चषक,
पीबतिं मकरंद सुख-राशि अंतर सची ।।७०।।

। राग सारंग । दान समय

दान दै री नवल किशोरी ।
माँगत लाल लाड़िलो नागर,
प्रगट भई दिन-दिन की चोरी ।।
नव-नारंग, कनक, हीरावलि,
विद्रुम सरस जलज-मनि गोरी ।
पूरित रस-पीयूष जुगल-घट,
कमल, कदली, खंजन की जोरी ।।
तोपै सकल सौंज दामन की,
कत सतराति कुटिल-दृग भोरी ।
नूपुर रव किंकिनी पिसुन-घर,
जैश्रीहित हरिवंश कहत नहिं थोरी ।।७१।।

। राग मल्हार । वर्षा समय (बन विहार)

देखो माई, सुंदरता की सीवाँ ।
व्रज नव-तरुनि कदंब नागरि,
निरखि करतिं अधग्रीवाँ ।।
जो कोऊ कोटि कलप लगि जीवै,

परम आराध्य श्री राधावल्लभलाल जी
वृन्दावन

रसना कोटिक पावै ।
तऊ रुचिर वदनारविंद की,
शोभा कहत न आवै ।।
देव-लोक, भू-लोक, रसातल,
सुनि कवि-कुल मति डरिये ।
सहज माधुरी अंग-अंग की,
कहि कासौं पटतरिये ।।
जै श्रीहित हरिवंश प्रताप, रूप,गुन,
वय, बल, श्याम उजागर ।
जाकी भ्रू-विलास बस पशुरिव,
दिन बिथकित रससागर ।।७२।।

। राग मल्हार । वर्षा समय (बन विहार)

देख्यो माई, अबला के बल-रासि ।
अति गज-मत्त निरंकुश मोहन निरखि बंधे लट-पासि ।
अब ही पंगु भई मन की गति बिनु उद्दिम अनियास ।
तब की कहा कहौं जब पिय प्रति चाहति भृकति-विलास ।
कच-संजमन ब्याज भुज दरसति, मुसकनि वदन-विकास ।
हा-हरिवंश, अनीति रीति हित, कत डारति तन त्रास ।।७३।।

। राग मल्हार । वर्षा समय (बन विहार)

नयो नेह, नव रंग, नयो रस, नवल श्याम वृषभानु-किशोरी ।
नव पीतांबर, नबल चूनरी, नई-नई बूँदनि भीजति गोरी ।।
नव वृन्दावन हरित मनोहर, नव चातक बोलत मोर मोरी ।
नव मुरली जु मल्हार नई गति, श्रवन सुनत आये घन घोरी ।।
नव भूषण नव मुकुट विराजत नई-नई उरप लेत थोरी-थोरी

www.RadhaVallabhMandir.com

जैश्रीहित हरिवंश असीस देति मुख चिरजीवौ भूतल यह जोरी ।।७४।।

आज दोऊ दामिनी मिलि बहसीं ।
बिच लै श्याम घटा अति नौतन ताके रंग रसी ।।
एक चमकि चहूँ ओर सखी री अपने सुभाइ लसी ।
आई एक सरस गहनी में दुहुँ भुज बीच बसी ।।
अम्बुज नील उभै विधु राजत तिनकी चलन खसी ।
जैश्रीहित हरिवंश लोभ भेटन मन पूरन सरद ससी ।।७५।।

। राग गौड़-मल्हार । बनबिहार या शय्या समय

हौं बलि जाऊँ नागरी श्याम ।
ऐसे ही रंग करौ निसि बासर वृन्दाबिपिन कुटी अभिराम ।
हास-विलास सुरत-रस सींचन पशुपति-दग्ध जिवावत काम ।।
जैश्रीहित हरिवंश लोल लोचन अलि करहु न सफल सकल सुखधाम ।।७६।।

।राग गौरी । होली समय

प्रथम यथा-मति प्रणऊँ श्रीवृन्दावन अति रम्य ।
श्रीराधिका कृपा बिनु सब के मननि अगम्य ।।
वर जमुना-जल सींचन दिनही सरद बसंत ।
बिबिध भाँति सुमनस् के सौरभ अलिकुल मंत ।।
अरुन नूत-पल्लव पर कूजहिं कोकिल-कीर ।
निर्तन करत सिखी-कुल अति आनंद अधीर ।।
बहत पवन रुचिदायक शीतल-मंद-सुगंध ।
अरुन, नील, सित मुकुलित जहाँ-तहाँ पूषन-बंधु ।।
अति कमनीय विराजत मंदिर नवल निकुंज ।
सेवत सगण प्रीति-जुत दिन मीनध्वज-पुंज ।।
रसिक-रासि तहां खेलत श्यामा-श्याम किशोर ।

www.RadhaVallabhMandir.com

उभै-बाहु परिरंजित उठे उनीदे भोर ।।
कनक कपिस पट शोभित सुभग साँवरे अंग ।
नील बसन कामिनि उर कंचुकी कसूंभी सुरंग ।।
ताल, रबाब, मुरज, डफ बाजत मधुर मृदंग ।
सरस उकति-गति सूचत वर बँसुरी मुख चंग ।।
दोऊ मिलि चांचर गावत गौरी राग अलाप ।
मानस-मृग बल बेधति भृकुटि-धनुष दृग-चाप ।।
दोऊ करतारिनि पटकत लटकत इत-उत जात ।
हो-हो-होरी बोलत अति आनंद कुलकात ।।
रसिक लाल पर मेलति कामिनी बदन-धूरि ।
पिय पिचकारिनु छिरकत तकि-तकि कुमकुम पूरि ।।
कबहुँ-कबहुँ चंदन-तरु निर्मित तरल हिंडोल ।
चढ़ि दोऊ जन झूलत फूलत करत कलोल ।।
वर हिंडोर-झकोरनि कामिनी अधिक डराति ।
पुलकि-पुलकि वेपथु-अंग प्रीतम उर लपटाति ।।
हित चिंतक निजु चेरिनि उर आनंद न समात ।
निरखि निपट नैननि सुख तृण तोरतिं बलि जात ।।
अति उदार बिबि सुंदर सुरत-सूर सुकुमार ।
जैश्रीहित हरिवंश करौ दिन दोऊ अचल बिहार ।।७७।।

।राग गौरी । शय्या या संभ्रममान समय

तेरे हित लैन आई, बन तें श्याम पठाई,
हरति कामिनी घन कदन काम कौ ।
काहे कौ करत बाधा, सुनु री चतुर राधा,

www.RadhaVallabhMandir.com

भेटि कें मेटि री माई प्रगट जगत-भौ ।।
देखि री रजनी नीकी, रचना रूचिर पी की,
पुलिन नलिन नभ उदित रोहिणी-धौ ।
तू तौऽब सखी सयानी, तै मेरी एकौ न मानी,
हौं तोसौं कहति हारी जुवति जुगति-सौ ।।
मोहन लाल छबीलो, अपने रंग रंगीलो,
मोहत विहंग, पशु मधुर मुरली रौ ।
वे तौऽब गलत तन जीवन, जोबन तव,
जीश्रीहित हरिवंश हरि भजहि भामिनी जौ ।।५८।।

।राग गौरी । शय्या संभ्रममान समय

यह जु एक मन बहुत ठौर करि कहि कौनें सचु पायो ।
जहाँ-तहाँ बिपत्ति जार जुवती लौं प्रगट पिंगला गायो ।
द्वै तुरंग पर जोर चढ़त हठ परत कौन पै धायो ।
कहिधौं कौन अंक पर राखै जो गनिका सुत जायो ।
जैश्रीहित हरिवंश प्रपंच, बंच, सब काल-ब्याल कौ खायो ।
यह जिय जानि श्याम-श्यामा पद-कमल-संगी सिर नायो ।।५९।।

।राग गौरी । श्रृंगार या शय्या समय

कहा कहौं इन नैननि की बात ।
ये अलि प्रिया वदन-अम्बुज-रस अटके अनत न जात ।।
जब-जब रुकत पलक-संपुट लट अति आतुर अकुलात ।
लंपट लव-निमेष अंतर तें अलप कलप रात-सात ।।
श्रुति पर कंज, दृगजन, कुच-बिच मृगमद ह्वै न समात ।

जैश्रीहित हरिवंश नाभि-सर जलचर जाचत साँवल गात ।।६०।।

।राग गौरी । रास समय

आजु सखी बन में जु बने प्रभु नाचत हैं व्रज-मंडन ।
वैस किशोर जुवति अंसनि पर दिये बिमल भुज-दंडन ।।
कोमल कुटिल अलक सुठि शोभित अवलंबित जुग-गंडन ।
मानहुं मधुप थकित रस-लंपट नीलकमल-के-खंडन ।।
हास-विलास हरत सबकौं मन काम-समूह-विहंडन ।
जैश्रीहित हरिवंश करत अपनो जस प्रगट अखिल ब्रह्मँडन ।।६१।।

।राग गौरी । रास समय

खेलत रास दुलहिनी-दूलहु ।
सुनहु न सखी सहित ललितादिक,
निरखि-निरखि नैननि किन फूलहु ।।
अति कल मधुर महा मोहन धुनि,
उपजति हंससुता के कूलहु ।
थेई-थेई बचन मिथुन मुख निसरत,
सुनि-सुनि देह-दसा किन भूलहु ।।
मृदु पदन्यास उठसि कुमकुम रज,
अद्भुज बहत समीर दुकूलहु ।
कबहुँ श्याम, श्यामा, दसनांचल-
कच, कुच, हार छुवत भुजमूलहु ।।
भृकुटि-विलास, हास-रस बरसत,
जैश्रीहित हरिवंश प्रेम-रस झूलहु ।।६२।।

www.RadhaVallabhMandir.com

।राग गौरी । रास समय

मोहन मदन त्रिभंगी । मोहन मुनि-मन रंगी ।
मोहन मुनि सघन प्रगट परमानंद गुन गंभीर गुपाला ।
सीस किरीट श्रवन मनि-कुंडल उर-मंडित बनमाला ।
पीतांबर तन धातु-विचित्रित कल किंकिनि कटि चंगी ।
नख-मनि-तरनि, चरन-सरसीरुह मोहन मदन त्रिभंगी ।।
मोहन वेणु बजावै । इहिं रव नारि बुलावै ।
आई व्रज नारि सुनत वंशी-रव गृहपति-बंधु बिसारे ।
दरसन मदन गुपाल मनोहर मनसिज-ताप निवारे ।
हरषित वदन, बंक अवलोकनि, सरस मधुर धुनि गावै ।
मधुमय श्याम समान अधर धरी मोहन बेनु बजावै ।।
रास रच्यौ बन माँहीं । बिमल कल्पतरु छाहीं ।
बिमल कल्पतरु-तीर सुपेशल शरद रैन वर चंदा ।
शीतल-मंद-सुगंध पवन बहै तहां खेलत नन्द-नंदा ।
अद्भुत ताल मृदंग मनोहर किंकिनि शब्द कराहीं ।
जमुना पुलिन रसिक रससागर रास रच्यौ बन माँहीं ।।
देखत मधुकर-केली । मोहे खग, मृग, बेली ।
मोहे मृग-धेनु-सहित स्वर-सुंदर, प्रेम-मगन पट छूटे ।
उड़गन चकित थकित ससि-मंडल, कोटि मदन-मन लूटे ।
अधरपान परिरंभन अति रस, आनंद मगन सहेली ।
जैश्रीहित हरिवंश रसिक सचु पावत देखत मधुकर-केली ।।६३।।

।राग गौरी । रास या संभ्रममान समय

बेनु माई बाजै वंशीबट ।
सदा बसंत रहत वृन्दावन,
पुलिन पवित्र सुभग जमुना तट ।।
जटित क्रीट, मकराकृत कुंडल,
मुखारबिंद भ्रमर मानों लट ।
दसननि कुंद कली छवि लज्जित,
सज्जित कनक समान पीत-पट ।।
मुनि मन ध्यान धरत नहिं पावत,
करत बिनोद संग बालक भट ।
दास अनन्य भजन रस कारन,
जैश्रीहित हरिवंश प्रगट लीला नट ।।६४।।

।राग गौरी । रास या संभ्रममान समय

मदन-मथन घन निकुंज खेलत हरि,
राका रूचिर सरद रजनी ।
जमुना पुलिन तट, सुरतरु के निकट,
रचित रास चलि मिलि सजनी ।
बाजत मृदु मृदंग नाचत सबै सुधंग,
तैं न श्रवन सुन्यौ बेनु बजनी ।
जैश्रीहित हरिवंश प्रभु राधिका रमण मोकौ,
भावै माई जगत भगत भजनी ।।६७।।

।राग कल्याण। शय्या समय

बिहरत दोऊ प्रीतम कुंज ।
अनुपम गौर श्याम तन शोभा बन बरसात सुख-पुंज ।।
अद्भुत स्रोत महा मनमथ को दुंदुभि भूषण-राव ।
जूझत सुभट परस्पर अंग-अंग उपजत कोटिक भाव ।।
भर संग्राम श्रमित अति अबला निद्रायत कल नैन ।
पिय के अंक निसंक तंक तन आलस-जुत कृत सैन ।।
लालन मिस आतुर पिय परसत अरू, नाभी, उरजत ।
अद्भुत छटा विलोकि अवनि पर विथकित वेपथु-गात ।।
नागरि निरखि मदन-विष व्यापत दियो सुधाधर धीर ।
सत्वर उठे महा मधु पीवत मिलत मीन मिव नीर ।।
'अबही मैं मुख मध्य बिलोके बिंबाधर-सुरसाल' ।
जाग्रत ज्यों भ्रम भयो परचो मन सत मनसिज कुल जाल ।।
'सकृदपिमयि अधरामृत मुपनय सुंदरी सहज सनेह ।
तव पद-पंकज को निज मंदिर, पालय सखि मम देह' ।।
प्रिया कहति, 'कहु कहाँ हुते पिय नव-निकुंज-वर-राज ।
सुंदर बचन रचन कत बितरत रतिलंपट बिनकाज' ।।
इतनो श्रवन सुनत मानिनि मुख अंतर रह्यौ न धीर ।
मति-कातर, बिरहज दुख व्यापत बहुतर श्वास-समीर ।।
जैश्रीहित हरिवंश भुजन आकर्षे लै राखे उर माँझ ।
मिथुन मिलत जु कछुक सुख उपज्यो त्रुटि-लव मिव भई साँझ ।।६६।।

।राग कल्याण । रास या शय्या समय

रूचिर राजति वधू कानन किशोरी ।
सरस षोडश किये, तिलक मृगमद दिये,
मृगज लोचन, उबटि अंग, सिर खोरी ।।
गंड-पंडीर-मंडित, चिकुर चंद्रिका,
मोदिनी कबरी गूँथित सुरंग डोरी ।
श्रवन ताटंक कै, चिबुक पर बिंदु दै ,
कसूंभी कंचुकी दुरे उरज फल कोरी ।।
वलय कंकण द्योति, नखनि जावक ज्योति,
उदर गुण-रेख, पट नील, कटि थोरी ।
सुभग जघनस्थली कुनित किंकिनी भली,
कोक संगीत रस-सिंधु झकझोरी ।।
बिबिध लीला रचित रहसि हरिवंश हित,
रसिक सिरमौर, राधा-रमन जोरी ।
भृकुटि निर्जित मदन, मंद सस्मित वदन,
किये रस बिवश घनश्याम-पिय गोरी ।।६७।।

।राग कल्याण । रास समय

रास में रसिक मोहन बने भामिनी ।
सुभग पावन पुलिन, सरस सौरभ नलिन,
मत्त मधुकर निकर, शरद की जामिनी ।।
त्रिविधि रोचक पवन, ताप दिनमनि दवन,
तहाँ ठाडे रवन संग सत कामिनी ।
ताल, वीणा, मृदंग, सरस नाचतिं सुधंग,
एक-तें-एक संगीत की स्वामिनी ।।
राग-रागिनी जमी, बिपिन बरसत अमी,
अधर-बिंबनि रमि मुरली अभिरामिनी ।

परम आराध्य श्री राधावल्लभलाल जी
वृन्दावन

लाग, कट्टर, उरप, सप्त सुर सों सुलप,
लेत सुंदरी सुघर राधिका नामिनी ।।
तत्त थेइ-थेइ करति गतिव नौतन धरति,
पलटि डग मग ढरति मत्त-गजगामिनी ।
धाई नवरंग धरी उरसि राजति खरी,
(जैश्री) उभै कलहंस हरिवंश घन-दामिनी ।।६८।।

।राग कल्याण । रास समय

मोहनी-मोहन रंगे प्रेम सुरंगे,
मत्त मुदित कल नाचत सुधंगे ।
सकल कला प्रवीन, कल्याण रागिनी लीन,
कहत न बनै माधुरी अंग-अंगे ।।
तरनितनया तीर, त्रिविध सखी समीर,
मानों मुनि-व्रत धरचो कपोती, कोकिला, कीर।
नागरी नव किशोर मिथुन मनसि चोर,
सरस गावत दोऊ मंजुल मंदर घोर ।।
कंकन-किंकिनी-धुनी, मुखर नूपुरनि सुनी,
जै श्रीहित हरिवंश रस-बरसै नव तरुनी ।।६९।।

।राग कल्याण । मंगला समय

आजु सम्हारति नाहिन गोरी ।
फूलि फिरति मत्त करिनी ज्यों, सुरत-समुद्र झकोरी ।
आलस-वलित अरुन घूसर-मषि, प्रगट करत दृग चोरी ।

पिय पर करून अमी रस बरसत अधर अरुनता थोरी ।।
बाँधति भृंग उरज-अम्बुज पर अलक-निबंध किशोरी ।
संगम किरचि-किरचि कंचुकि-बंद सिथिल भई कटि-डोरी ।।
देत असीस निरखि जुबतीजन जिनकें प्रीति न थोरी ।
जैश्रीहित हरिवंश बिपिन-भूतल पर संतत अविचल जोरी ।।७०।।

।राग कल्याण। रास समय

श्याम संग राधिका रास-मंडल बनी ।
बीच नंदलाल व्रज बाल चंपक बरन,
ज्यौंऽव घन-तडित बिच कनक मर्कत-मनी ।।
लेति गति मान तत्त-थेई, हस्तक भेद,
सरिगमपधनिये सप्त स्वर नंदिनी ।
नित्य रस पहिर पट-नील प्रकटित छवि,
राग-रागिनी तान, मान, संगीत मत्त,
थकित राकेश नभ शरद की जामिनी।
जै श्रीहित हरिवंश प्रभु हंस कटि-केहरी,
दूरि कृत मदन-मद मत्त-गजगामिनी ।।७१।।

।राग कान्हरी । शय्या समय

सुंदर पुलिन सुभग सुखदायक ।
नव-नव घन अनुराग परस्पर,
खेलत कुँवर नागरी नायक ।।
शीतल हंससुता रस बीचिनी-

www.RadhaVallabhMandir.com

परसि पवन सीकर मृदु बरषत ।
वर मंदार, कमल, चंपक कुल-
सौरभ सरस मिथुन मन हरषत ।।
सकल सुधंग बिलास परावधि,
नाचत नवल मिले स्वर गावत ।
मृगज, मयूर, मराल, भ्रमर, पिक,
अद्भुत कोटि मदन सिर नावत ।।
निर्मित कुसुम शयन मधु पूरित-
भाजन कनक निकुंज विराजत ।
रजनीमुख सुख-राशि परस्पर,
सुरत-समर दोऊ दल साजत ।।
विटकुल-नृपति किशोरी कर धृत,
बुधि बल नीवि-बंधन मोचत ।
नेति-नेति वचनामृत बोलति,
प्रणय कोप प्रीतम नहिं सोचत ।।
जैश्रीहित हरिवंश रसिक ललितादिक,
लता-भवन रंध्रनि अवलोकित ।
अनुपम सुख भर भरित बिबस असु,
आनंद-बारि कंठ दृग रोकत ।।७२।।

।राग कान्हरौ। प्रेमाधिक्य संभ्रममान समय

खंजन मीन, मृगज-मद मेटत कहा कहौं नैननि की बातें ।
सुनि सुंदरी कहां लौं सिखई मोहन वशीकरण की घातें ।।
बंक, निसंक, चपल, अनियारे, अरुन, श्याम-सित रचे कहौं तें ।
डरत न हरव परायो सर्वस मृदु मधु मिव मादिक दृग-पाँतें ।।
नेकु प्रसन्न दृष्टि पूरन करि नहिं मो तन चितयौ प्रमुदा तें
जैश्रीहित हरिवंश हंस-कल-गामिनी भावै सो करहु प्रेम के नातें ।।७३।।

www.RadhaVallabhMandir.com

।राग कान्हरौ । प्रेमधिक्य संभ्रममान समय

काहे को मान बढ़ावति है,
बालक मृगलोचनि ।
हौंऽब डरनि कछु कहि न सकति,
इक बात संकोचनि ।।
मत्त मुरली अन्तर तव गावत,
जागृत-शयन तवाकृति सोचनि ।
जै श्रीहित हरिवंश महा मोहन पिय,
आतुर विट विरहज दुख-मोचनि ।।७४।।

।राग कान्हरौ । प्रेमाधिक्य संभ्रममान समय

हौं जु कहति इक बात, सखी
सुनि काहे कों डारति ।।
प्राण-रवण सौं क्यौंऽकरति,
आगस् बिन आरति ।।
पिय चितवत तव चंद्रवदन तन,
तू अध-मुख निज चरन निहारति ।
वे मृदु चिबुक प्रलोइ प्रबोधत,
तू भामिनि कर-सों-कर टारति।
बिवश अधीर बिरह अति कातर,
सर-औसर कछुवै न विचारित ।
जै श्रीहित हरिवंश रहसि प्रीतम मिलि,
तृषित नैन काहे न प्रतिपारति ।।७७।।

www.RadhaVallabhMandir.com

।राग कान्हरौ। शय्या समय

नागरी निकुंज-ऐन, किसलय-दल रचित सैन,
कोक-कला कुसल कुंवरि अति उदार री ।
सुरत रंग अंग-अंग, हाव-भाव भृकुटि-भंग,
माधुरी-तरंग मथत कोटि मार री ।।
मुखर नूपुरनि सुभाव, किंकिनी विचित्र राव,
'बिरमि-बिरमि' नाथ वदत वर विहार री ।
लाड़िली किशोर राज हंस-हंसिनी समाज,
सींचत हरिवंश-नयन सुरस-सार री ।।७६।।

।राग कान्हरौ। परिहास व सुरतान्त समय

लटकति फिरति जुवति रस-फूली ।
लताभवन में सकल निशि,
पिय संग सुरत-हिंडोरे झूली ।।
जद्यपि अति अनुराग रसासव,
पान बिवश नाहिन गति भूली ।
आलस-बलित-नैन, बिगलित-लट,
उर पर कछुक कंचुकी खूली ।।
मरगाजी माल सिथिल कटि-बंधन,
चित्रित कज्जल पीक दुकूली ।
जै श्रीहित हरिवंश मदन-सर जर-जर,
बिथकित श्याम सजीवन-मूली ।।७७।।

www.RadhaVallabhMandir.com

।राग कान्हरौ। रास समय

सुधंग नाचति नवल किशोरी ।
थेई-थेई कहति चहति प्रीतम दिशि,
वदनचंद्र मनो तृषित चकोरी ।।
तान,बंधान, मान में नागरी,
देखात श्याम कहत हो-हो री ।
जै श्रीहित हरिवंश माधुरी अंग-अंग,
बरबस लियो मोहन चित चोरी ।।७८।।

।राग कान्हरौ। रास समय

रहसि-रहसि मोहन पिय के संग री,
लड़ैती अतिरस लटकति ।
सरस सुधंग-अंग में नागरि,
थेई-थेई कहति अवनि पद पटकति ।।
कोक-कला कुल जानि शिरोमणि,
अभिनय कुटिल भृकुटियनि मटकति ।
बिवश भये प्रीतम अलि लंपट,
निरखि करज नासापुट चटकति ।।
गुन गन रसिकराइ चूड़ामनि,
रिझवति पदिक हार पट झटकति ।
जैश्रीहित हरिवंश निकट दासीजन,
लोचन-चषक रसासव गटकति ।।७९।।

www.RadhaVallabhMandir.com

।राग कान्हरौ । शय्या समय

वल्लवी सुकनक-वल्लरी, तमाल श्याम संग,
लागि रही अंग-अंग मनोभिरामिनी ।
वदन-जोति मनो मयंक, अलक तिलक छवि कलंक,
छपति श्याम अंक मानों जलद दामिनी ।।
बिगत बास हेम-खम्भ मनों भुवंग बेनी-दंड,
पिय के कंठ प्रेम-पुंज कुंज कामिनी ।
जैश्री शोभित हरिवंश नाथ साथ सुरत-आलसवंत,
उरज कनक-कलश याधिका सुनामिनी ।।८०।।

।राग केदार। रास समय

वृषभानु-नंदिनी मधुर कल गावै ।
विकट औधर तान चर्चरी ताल सों,
नन्द-नन्दन मनसि मोद उपजावै ।
प्रथम मज्जन चारु,चीर, कज्जल, तिलक,
श्रवन कुंडल, वदन चंद्रनि लजावै ।।
सुभग नक-बेसरी रतन-हाटक जरी,
अधर-बंधूक दसन-कुंद चमकावै ।।
वलय कंकन चारु, उरसि राजत हारु,
कटिऽव किंकिनी, चरन नूपुर बजावै ।
हंस-कल-गाभिनी मथत मद कामिनी,
नखानि मदयंतिका रंग रुचि द्यावै ।।
नृत्य-सागर रभस, रहसि नागर नवल,
चन्द्रचाली बिबिध भेदनि जनावै ।

www.RadhaVallabhMandir.com

कोक-विद्या बिदित, भाइ-अभिनय निपुन,
भ्रू-बिलासनि मकरकेतन नचावै ।।
निबिड़-कानन-भवन, बाहु रंजित स्वन,
सरस-आलाप सुख-पुंज बरसावै ।
उभै-संगम-सिंधु, सुरत पूषन-बंधु,
द्रवत मकरंद हरिवंश अलि पावै ।।८१।।

।राग केदारौ। शय्या समय

नागरता की राशि किशोरी ।
नव-नागर-कुल-मौलि साँवरौ,
बरबस कियो चितै मुख मोरी ।
रूप-रुचिर अंग-अंग माधुरी,
बिनु भूषन भूषित व्रज गोरी ।
छिन-छिन कुसल सुधंग-अंग में,
कोक-रभस रस-सिंधु झकोरी ।।
चंचल रसिक मधुप मोहन मन,
राखे कनक-कमल-कुच कोरी ।
प्रीतम नैन जुगल खंजन खग,
बांधे बिबिध निबंधन डारी ।।
अवनी-उदर नाभि-सरसी में,
मनहुँ कछुक मादिक वधु घोरी ।
जै श्रीहित हरिवंश पिवत सुंदर वर,
सींव सुदृढ़ निगमनि की तोरी ।।८२।।

परम आराध्य श्री राधावल्लभलाल जी
वृन्दावन

।राग केदार। प्रेमवैचित्री संभ्रममान समय

छाँड़ि दै मानिनी मान मन धरिबौ ।
प्रणत सुंदर सुधर प्राणवल्लभ नवल,
बचन आधीन सों इतो कत करिबौ ।।
जपत हरि बिवश तव नाम प्रतिपट विमल,
मनसि तव ध्यान तें निमिष नाहिं टरिबौ ।
घटत पल-पल सुभग सरद की जामिनी,
भामिनी सरस अनुराग दिसि ढरिबौ ।।
हौं जु कछु कहति निजु बात सुनु मान सखि,
सुमुखि बिनकाज धन बिरह दुख भरिबौ ।
मिलत हरिवंश हित कुंज किसलय सैन,
करत कल केलि सुख-सिंधु में तरिबौ ।।८३।।

।राग केदार। सुरतान्त समय

आजुऽब देखियत है हो प्यारी रंग भरी ।
मोपै न दुरत चोरी,
वृषभानु की किशोरी,
सिथिल कटी की डोरी,
नंद के लालन सों सुरत लरी ।
मोतियन लर टूटी,
चिकुर-चंद्रिका छूटी,
रहसि रसिक लूटी,
गंडनि पीक परी ।
नैंननि आलस बस,
अधर-बिंब निरस,
पुलक प्रेम-परस,
जैश्रीहित हरिवंश री राजति खरी ।।८४।।

।फलस्तुती--छप्पय।

भव जल निधिकौं नाव काम पावक कौं पानी ।
प्रेम भक्ति कौ मूल मोद मंगल सुख दानी ।।
निगम सार सिद्धान्त सन्त विश्राम मधुर वर ।
रसिकन कौ रस सार संकल रसकौ घर ।।
चौरासी श्री(हित) हरिवंश कृत पढ़ै सुनै निशि भोर ।
छुटै चौरासी भ्रमनि तै निरखै युगल किशोर ।।१।।
निरखै युगल किशोर भोर अरु रैनि न जानै ।
पियै रूप रस मत्त भयौ कछु मनहिं न आनै ।।
प्रेम लक्षणा भक्ति होय हिय आनँद कारी ।
अरु वृन्दावन बास सखी सुख कौ अधिकारी ।।
कुञ्ज महलकी टहल सुख-संपति दंपति पाइ है ।
जय श्री रूपलाल हित प्रीति सौं जो चौरासी गाइ है ।।२।।

श्रीफलस्तुती की जै जै श्रीहित हरिवंश

।राग संख्या-कवित्त।

षट् पद विभास मांझ सात हैं बिलावत में-
टोडी में चतुर आसावरी में द्वै बने ।
सप्त हैं धनाश्री में युगल वसन्तकेलि-
देवगंधार पंच दोय रस सों सने ।।
सारँग में षोडश हैं चार ही मलार एक-
गौड़ में सुहायौ नव गौरी रस में भने ।
षट् कल्याण निधि कान्हरौ केदारौ वेद-
वाणी हितजू की सब चौदह राग में गने ।।

।। श्रीहित राधावल्लभोजयति ।।
।। श्रीहित हरिवंशचन्द्रोजयति ।।

श्रीहित स्फुटवाणीजी

।। सवैया-चित्रपदा ।

द्वादश चन्द्र, कृतस्थल मंगल, बुद्ध विरुद्ध, सुर-गुरू बंक ।
यदि दशम्म-भवन्न भृगू-सुत, मंद सु केतु जनम्म के अंक ।।
अष्टम राहु, चतुर्थ दिवामणि, तौ हरिवंश करत न शंक ।
जो पै कृष्ण-चरण मन अर्पित तौ करि है कहा नौ ग्रह रंक ।।१।।

। सवैया-मालती ।

भानु दशम्म, जनम्म निशापति, मंगल-बुद्ध शिवस्थल लीके ।
जो गुरु होंय धरम्म-भवन्न के तौ भृगुनंद सुमंद नवी के ।।
तीसरौ केतु समेत विधु-ग्रस तौ हरिवश मन क्रम फीके ।
गोविंद छाँड़ि भ्रमंत दशों-दिश तौ करिहै कहा नौ ग्रह नीके ।।२।।

। छप्पय ।

ना जानो छिन अंत कवन बुधि घटहि प्रकासित ।
छुटि चेतन जु अचेत तेऊ मुनि भये विष वासित ।।
पाराशर सुर-इन्द्र कल्प, कामिनी मन फंद्या ।
परि व देह दुख-द्वन्द्व कौन क्रम-काल निकंद्या ।।
इहि डरहि डरपि हरिवंश हित जिनहि भ्रमहि गुण-सलिल पर ।
जिहि नामनि मंगल लोक तिहु सुहरि-पद भज न विलंब कर।।३।।

। सुगत-सवैयावृत ।

तू बालक नहिं, भरचौ सयानप काहे कृष्ण भजत नहिं नीके ।
अतिव सुमिष्ट तजिव सुरभिन-पय मन बंधित तंदुल-जल फीके ।।
(जैश्री) हित हरिवंश नर्क गति दुरभर यम द्वारै कटियत न कछीके।
भव-अज कठिन, मुनिजन दुर्लभ, पावत क्यौं जु मनुज-तन भीके।।४४।।

। कुण्डलिया ।

चकई प्राण जु घट रहैं पिय बिछुरंत निकज्ज ।
सर-अंतर अरु काल-निसि तरफ तेज घन गज्ज ।।
तरफ तेज घन गज्ज लज्ज तुहि वदन न आवै ।
जल-विहून करि नैन भोर किहिं भाइ बतावै ।।
(जैश्री) हित हरिवंश विचारि कौन अस वाद जु बकई ।
सारस यह संदेह प्राण घट रहैं जु चकई ।।७।।

। कुण्डलिया ।

सारस सर-बिछुरंत कौं जो पल सहै सरीर ।
अगिन-अनंग जु तिय भखै, तौ जानै पर-पीर ।।
तौ जानै पर-पीर धीर धरि सकहि बज्र-तन ।
मरत सारसहि फूटि पुनि न परचौ जु लहत मन ।।
(जैश्री) हित हरिवंश विचारि प्रेम विरहा बिन वा रस ।
निकट कंत नित रहत, मरम कहा जानै सारस ।।६।।

। छप्पय ।

तैं भाजन कृत जटित विमल चन्दन कृत इन्धन ।
अमृत पूरि तिहि मध्य करत सर्षप खल रिंधन ।।
अद्‌भुत धर पर करत कष्ट, कंचन-हल वाहत ।
बार करत पौंवार मंद, बोवन विष चाहत ।।
(जैश्री) हित हरिवंश विचारि के यह मनुज-देह गुरु-चरण गहि ।
सकहि तौ व सब प्रपंच तजि, कृष्ण-गोविंद कहि ।।७।।

। सवैया ।

तातैं भैया मेरी सौं कृष्ण-गुण संचु ।
कुत्सित वाद विकारहिं परधन सुनु सिख मन्द पर-तिय बंचु ।
मनिगन-पुंज व्रजपति छौंड़त हित हरिवंश कर गहि कंचु ।।
पाये जान जगत में सव जन कपटी कुटिल कलियुग-टंचु ।
इहि-परलोक सकल सुख पावत, मेरी सौं कृष्ण-गुण संचु ।।८।।

। अरिल्ल ।

मानुष कौ तन पाय भजौ ब्रजनाथ कौं ।
दबीं लैकैं मूढ़ जरावत हाथ कौं ।।
(जैश्री) हित हरिवंश प्रपंच विषै रस मोह के ।
हरि हौं, बिन कंचन क्यों चलै पचीसा लोह के ।।९।।

। राग बिलावल ।

तू रति रंगभरी देखियत है श्री राधे, रहसि मोहन सों व रैन ।
गति अति सिथिल, प्रगट पलटे पट, गौर अंग पर राजत अैन ।।
जलज कपोल ललित लटकति लट, भृकुटि कुटिल ज्यौं धनुषधृत मैन ।

www.RadhaVallabhMandir.com

सुंदरी रहिव कहिव कंचुकी कत, कनक-कलश-कुच बिच नख दैन ।।
अधर-बिंब दलमलित, आलस-जुत अरु आनंद सूचत सखि नैन ।
जैश्रीहित हरिवंश दुरत नहि नागरी, नागर मधुप मथत सुख-सैन।।१०।

। राग बिलालवल ।

आनंद आज नंद के द्वार ।
दास अनन्य भजन-रस कारन प्रगटे लाल मनोहर ग्वार ।।
चंदन सकल धेनु-तन-मंडित कुसुम-दाम रंजित आगार ।
पूरन कुंभ बने तोरन पर बीच रूचिर पीपर की डार ।।
जुवति जूथ मिलि गोप विराजत बाजत पणव मृदंग सुतार ।
(जैश्री) हित हरिवंश अजिरवर बीथिनु दधि-मधु-दूध-हरिद के ख्वार।।११।।

। राग धनाश्री ।

मोहन लाल के रंग राची ।
मेरे ख्याल परौ जिन कोऊ बात दशों-दिशि माची ।।
कंत अनंत करौ जो कोऊ बात कहौं सुनि साची ।
यह जिय जाउ भलैं सिर ऊपर, हौ व प्रगट है नाची ।
जाग्रत-सैन रहत उर ऊपर मणि कंचन ज्यौं पाची ।
(जैश्री) हित हरिवंश डरौं काके डर हौं नाहिन मति काची ।।१२।।

। पद ।

मैं जु मोहल सुन्यौ बेनु गोपाल कौ ।
व्योम मुनि यान, सुन नारि सुनि चकित भई,
कहत नहीं बनत कछु भेद यति ताल कौ ।।
श्रवन कुंडल छुरित, रूरत कुंतल ललित,

www.RadhaVallabhMandir.com

रुचिर कस्तूरि चंदन तिलक भाल कौ ।
चंद-गति मंद भई, निरखि छवि काम गहि,
देखि हरिवंश हित वेष नंदलाल कौ ।।१३।।

। पद ।

आज तू ग्वाल गोपाल सों खेलि री ।
छाँड़ि अति मान, बन चपल चलि भामिनी,
तरु तमाल सों अरुझि कनक-की-बेलि री ।
सुभट सुंदर ललन, ताप परबल दमन,
तू व ललना रसिक काम की केलि री ।।
बेनु कानन कुनित, श्रवन सुंदरी सुनत,
मुक्ति सम सकल सुख पाय पग पेलि री ।।
विरह-व्याकुल नाथ गान गुन जुवति तव,
निरखि मुख, काम कौ कदम अबहेलि री ।।
सुनत हरिवंश हित, मिलत राधा-रमन,
कंठ भुज मेलि, सुख-सिंधु रस झेलि री ।।१४।।

। पद ।

वृषभानु नंदिनी राजति हैं ।
सुरत-रंग-रस भरी भामिनी, सकल नारि सिर गाजति है ।।
इत-उत चलति, परत दोऊ पग, मद-गयंद गति लाजति हैं ।
अधर निरंग, रंग गंडनि पर, कटक काम कौ साजति हैं ।।
उर पर लटक रही लट कारी, कटिव किंकिनी बाजति हैं ।
जैश्रीहित हरिवंश पलटि प्रीतम पट, जुवति जुगति सब छाजति हैं ।।१५।।

।पद।

चलौ वृषभानु गोप के द्वार ।
जन्म लियौ मोहन हित श्याम, आनंद-निधि सुकुमार ।।
गावत जुवति मुदित मिलि मंगल, उच्च मधुर धुनि-धार ।
बिबिध कुसुम कोमल किसलय दल, सोभित बंदनवार ।।
बिदित वेद-विधि विहित विप्रवर, करि स्वस्तिनु उच्चार ।
मृदुल मृदंग, मुरज, भेरी, डफ, दिवि दुंदुभि खकार ।।
मागध ूत बंदी चारन जस, कहत पुकार-पुकार ।
हाटक, हीर, चीर, पाटंबर, देत संभार-संभार ।।
चंदन सकल धेनु-तन मंडित चले जु ग्वाल सिंगार ।
जैश्रीहित हरिवंश दुग्ध-दधि छिरकत, मध्य हरिद्रा गार ।।१६।।

। राग गौरी ।

तेरौई ध्यान राधिका प्यारी गोवर्द्धनधर लालहि ।
कनक लता सी क्यों न बिराजत अरुझी श्याम तमालहि ।।
गौरी गान सुतान ताल गहि रिझवति क्यौं न गुपालहि ।
यह जोवन कंचन-तन ग्वालिन सफल होत इह कालहि ।।
मेरे कहैं विलंब न करि सखि, भूरि भाग अति भालहि ।
जैश्रीहित हरिवंश उचित हौं चाहति श्याम कंठकी मालहि ।।१७।।

। पद ।

आरती मदन गोपाल की कीजियै ।
देव, ऋषि, व्यास, शुकदास सब कहत निज,
क्यों न बिन कष्ट रस-सिन्धु कों पीजियै ।।
अगर करि धूप कुमकुम मलय रंजित-

www.RadhaVallabhMandir.com

नव वर्तिका घृत सों पूरि राखौं ।
कुसुम कृत माल नंदलाल के भाल पर,
तिलक करि प्रगट जस क्यों न भाखौं ।।
भोग प्रभु जोग भरि थार धरि कृष्ण पर,
मुदित भुज-दण्ड वर चौंर ढारौं ।।
आचमन पान हित, मिलत कूर्पर-जल,
सुभग मुखवास, कुल-ताप जारौं ।।
शंख, दुंदुभि, पणव, घंट, कल, कल वेणु रव,
झल्लरी सहित स्वर सप्त नाचौं ।
मनुज-तन पाई इहिं दाइ ब्रजराज भजि,
सुखद हरिवंश प्रभु क्यों न जाचौं ।।१८।।

। पद ।

आरती कीजै श्याम सुंदर की ।
नंद के नन्दन राधिका वर की ।
भक्ति करि दीप प्रेम करि बाती ।
साधु संगति करि अनुदित राती ।।
आरती जुवति जूथ मन भावै ।
श्याम लीला श्रीहरिवंश हित गावै ।।१९।।

।राग गौरी ।

रहौ कौऊ काहू मनहिं दिये ।
मेरे प्राण नाथ श्रीश्यामा शपथ करौं तृण छिये ।।
जे अवतार कदम्ब भजत हैं, धरि दृढ़ व्रत जु हिये ।
तेऊ उमगि तजत मर्य्यादा, बन बिहार रस पिये ।।
खोये रतन फिरत जे घर-घर कौन काज ऐरे जिये ।
जैश्रीहित हरिवंश अनत सचु नाहीं बिन या रजहिं लिये ।।२०।।

www.RadhaVallabhMandir.com

। राग कल्याण ।

हरि रसना राधा-राधा रट ।
अति अधीन आतुर यद्दपि पिय कहियत है नागर नट ।।
संभ्रम द्रुम, परिरंभन कुंजन, ढूँढ़त कालिंदी तट ।
विलपत, हँसत, विषीदत, स्वेदित, सतु सींचत अँसुवन वंशीबट ।।
अंगराग, परिधान वसन, लागत लाते जु पीत-पट ।
जैश्रीहित हरिवंश प्रशंसति श्यामा दै प्यारी कंचन-घट ।।२१।।

। राग कल्याण ।

लाल की रूप माधुरी नैननि निरखि नेक सखी ।
मनसिज मन हरन हास, सांमरो सुकुमार रासि,
नख-सिख अंग-अंगनि उमगि, सौभग सींव नखी ।
रंग-मगी सिर सुरंग पाग, लटकि रही वाम-भाग,
चंपकली कुटिल अलक बीच-बीच रखी ।
आयत-दृग अरुन लोल, कुंडल मंडित कपोल,
अधर दशन दीपति की छवि, क्यों हू न जात लखी ।
अभयद भुज-दंड मूल, पीन अंस सानुकूल,
कनक-निकष लसि दुकूल, दामिनी धरखी ।
उर पर मंदार-हार, मुक्ता-लर वर सुढार,
मत्त दुरद-गति, तियन की देह-दशा करखी ।।
मुकुलित-वय नव किशोर, क्वन-क्वन वित्त के चोर,
मधुरितु पिक-शाव नूत-मंजरी चखी ।
जैश्री जटवत हरिवंश गान, रागिनी कल्याण तान,
सप्त स्वरन कल इते पर, मुरलिका बरखी ।।२२।।

। राग मल्हार ।

दोऊ जन भीजत अटके बातन ।
सघन कुंज के द्वारे ठाड़े अंबर लपटे गातन ।।
ललिता लति-रूप-रस भीजी, बूँद बचावति पातन ।
जैश्रीहित हरिवंश परस्पर प्रीतम, मिलवत रतिरस घातन ।।२३।।

। दोहा ।

सबसों हित, निष्काम मति, वृन्दावन विश्राम ।
श्रीराधावल्लभ लाल कौ, हृदय ध्यान मुख नाम ।।१।।
तनहिं राखि सतसंग में, मनहि प्रेम रस भेव ।
सुख चाहत हरिवंश हित, कृष्ण-कल्पतरु सेव ।।२।।
निकसि कुंज ठाडे भये, भुजा परस्पर अंस ।
श्री राधावल्लभ मुख कमल, निरखि नैन हरिवंश ।।३।।
रसना कटौ जु अन रटौं, निरखि अन फुटौ नैन ।
श्रवण फुटौ जो अन सुनौं, बिन राधा जस बैन ।।४।।

आद्य ब्रह्मसिद्धाद्वैत श्रीराधावल्लभीय संप्रदाय पूर्वाचार्य शिरोमणि जगद्गुरू श्रीहित वंशीस्वरूप गोस्वामी जैश्रीहित हरिवंशचन्द्र महाप्रभु रचित श्रीमच्चतुराशी एवं श्रीहित स्फुटवाणी जी संपूर्ण की जय जय श्रीहित हरिवंश ।

www.RadhaVallabhMandir.com

श्रीहिताचार्यमहाप्रभु द्वारा प्रेषित श्रीबिट्ठलदास को पत्रद्वय

श्री युगल गुण सम्पन्न रसरीति बढ़ावन चिरंजीव मेरे प्राणन के प्राण बिठ्ठलदास जोग्य लिखितं श्री वृन्दावन रजोपसेवी श्रीहरिवंशी जोरी सुमिरन बंचनौ । जोरी सुमिरन मत्त रहौ । जोरी जो है सुख बरषत है । तुम कुशल स्वरूप हौ । तिहारे हस्ताक्षर बारम्बार आवत हैं, सुख अमृत स्वरूप है, पत्री बाँचत आनन्द उमड़ि चलै है । मेरी बुद्धि कौं इतनी शक्ति नहीं जो कहिं सकौं पर तोहि जानत हौ । श्री स्वामिनी जू तुम पर बहुत प्रसन्न है । हम कहा आर्शीवाद देंय, हम यही आर्शीवाद देत है कि तिहारौ आयुष बढ़ौ और तिहारी सकल सम्पत्ति बढ़ौ, तिहारे मनकौ मनोरथ पूरण होहु, हम नेत्रनि सुख देखैं, हमारी भेट यही है । यहाँ की काहू बात की चिन्ता मत करौ । तेरी पहिचानतैं मोकूँ श्रीस्यामा जू बहुत सुख देत हैं । तुम लिखौ हौ दिन दश में आवैंगे सोई आशा प्राण रहे हैं । श्रीश्यामा जू बेगि लै आवैं । चिरञ्जीव कृष्णदास मोहनदास कौ कृष्ण सुमिरन, रंगा कौ दण्डौत बनमाली धर्मशाला कौ कृष्ण सुमिरंन बाँचनौ ।

दूसरी पत्री ।

श्रीवृषभानुनन्दिनी जयति। जोग्य लिखितं श्रीहरिवंश बिठ्ठलदास के कोटि-कोटि अपराध मैं क्षेवी आगले पाछिले। बिठ्ठलदास मेरे प्राण हैं जो शास्त्र मर्याद सत्य है और गुरू महिमः ऐसें ही सत्य है जो ब्रज नव तरुणि कदम्ब चूड़ामणि श्रीराधे तिहारे स्थापे गुरू मार्ग विषै

परम आराध्य श्री राधाबल्लभलाल जी
वृन्दावन

अविश्वास अज्ञानी कौ होत हैं तातैं यह मर्याद राखनौ ।
तुम दोऊ सफल आनन्द बरसौ, बिठ्ठलदास कौ अहो सींचनौ ।
श्रीमुख पत्रद्वय की जै जै श्रीराधे ।

।। जै जै श्री हरिवंश ।।